POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A. Part-2 (Hons), Paper-4

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D College, Tajpur,
Samastipur

तुलनात्मक राजनीति का क्षेत्र

तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र के संबंध में विद्वानों में परस्पर मतभेद है। इसके विषयक्षेत्र को लेकर प्रमुख समस्या यह है कि तुलनात्मक राजनीति में क्या-क्या सम्मिलित किया जाए और क्या-क्या अध्ययन से बाहर रखा जाए। जी. के. रावर्ट्स ने अपनी पुस्तक 'वाट इज कम्पेरेटिव पालेटिक्स?' में लिखा है कि 'तुलनात्मक राजनीति में अधिक आधारभूत समस्या इसकी उचित और तर्कसंगत सीमाओं की है।"

तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र को लेकर परम्परावादियों एवं आधुनिक राजनीतिशास्त्रियों में गहरा मतभेद है। संस्थागत दृष्टिकोण के समर्थकों के अनुसार तुलनात्मक राजनीति में केवल संविधान द्वारा स्थापित सरकारी संरचना का तथा संविधान द्वारा निर्मित किए गए राजनीतिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन ही किया जाना चाहिए। अरस्तू ने 158 संविधानों की तुलना कर उन्हें कई वर्गों में बांटा और आदर्श राज्य को खोजने का प्रयत्न किया। वर्तमान काल में मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार और सूक्ष्म राजनीतिक

Scanned with CamScanner

प्रक्रियाओं का व्यापक रूप से अध्ययन पर जोर दिया जा रहा है। राजनीतिक अनुभव-संस्थाओं, व्यवहारों और सरकारी प्रक्रियाओं का व्यापक रूप से अध्ययन करना आज की तुलनात्मक राजनीति का विषय बन गया है। व्यवहारवादी दृष्टिकोण के समर्थकों का मानना है कि तुलनात्मक राजनीति में केवल कानूनी व्यवस्था या औपचारिक संस्थाओं और गैर राजकीय संस्थाओं के राजनीतिक व्यवहार से संबंधित सभी तथ्य एकत्रित करके विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं में तुलना करनी चाहिए।

तुलनात्मक राजनीति की परंपरागत व्यवस्था में इसके विषयक्षेत्र के सम्बंध में मुख्य मान्यता कानूनी, संवैधानिक और संस्थागत ढाँचों के तुलनात्मक अध्ययन की रही है। इसे तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र का कानूनी दृष्टिकोण कहा जाता है। इसके अनुसार तुलनात्मक राजनीति में केवल संविधान द्वारा नियत किए गए राजनीतिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन ही किया जाना चाहिए।

इसप्रकार हम देखते हैं कि तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र के संबंध में यह कहा जा सकता है कि यह न केवल शासन संस्थानों का अध्ययन है बल्कि इसमें शासन व्यवहार के प्रतिमान तथा गैर राजकीय संस्थाओं के राजनीतिक व्यवहार का भी अध्ययन सम्मिलित है।

Dr. Uzma Afra
Asst. professor

Scanned with CamScanner